प्रकाशनार्थ

पटना, 18 फरवरी। एशियन डेवलपमेंट रिसर्च इंस्टीट्यूट (आद्री), पटना द्वारा 'केंद्रीय बजट, 2021-22'' शीर्षक चर्चा का आयोजन किया गया। चर्चा का आरंभ आद्री के निदेशक प्रोफेसर प्रभात पी. घोष ने मुख्य अतिथि के बतौर माननीय राज्य सभा सदस्य श्री सुशील कुमार मोदी का स्वागत करते हुए किया और आयोजन के सभी वक्ताओं को आमंत्रित किया।

आयोजन के मुख्य अतिथि श्री सुशील कुमार मोदी ने अपने संबोधन में कहा कि बजट का जोर स्वास्थ्य और कल्याण, पूंजीगत व्यय और अधिसंरचना पर खर्च पर, तथा वित्तीय सुधारों पर रहा है। उन्होंने यह भी कहा कि केंद्रीय बजट में पूंजीगत व्यय में की गई वृद्धि प्रशंसनीय है क्योंकि अर्थव्यवस्था पर इसका बहुगुणक प्रभाव होता है जो अर्थव्यवस्था के वी आकार में पुनःप्रवर्तन के लिए काफी जरूरी है। उन्होंने महामारी के दौरान गरीबों की मदद के लिए प्रत्यक्ष लाभांतरण के जरिए विभिन्न कल्याणमूलक योजनाओं को सुगम बनाने के केंद्र सरकार के प्रयासों की भी सराहना की।

आद्री के डॉ. सुधांशु कुमार ने जोर देकर कहा कि वर्तमान केंद्रीय बजट के निहितार्थ आगामी दशक के लिए हैं। उन्होंने आर्थिक वृद्धि को बढ़ावा देने के लिए स्वास्थ्य और कृषि जैसे अर्थव्यवस्था के मुख्य क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करने के लिए बजट की प्रशंसा की। हालांकि उन्होंने इस बात की ओर भी ध्यान दिलाया कि भारतीय अर्थव्यवस्था को कोविड के पहले की स्थिति में पहुंचने में कम से कम 2 वर्ष लगेंगे।

पटना भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान की डॉ. पापिया राज ने बजट की प्रशंसा करते हुए कहा कि स्वास्थ्य व्यय में 137 प्रतिशत वृद्धि और चिकित्सा संबंधी सेवाओं से समग्र स्वास्थ्य को बढ़ावा देने की दिशा में जाने से ही स्पष्ट है कि यह निश्चित रूप से स्वस्थ बजट है। लेकिन, पटना भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान की डॉ. मेघना दत्ता ने इस बात पर जोर दिया कि बजट में समग्र मांग बढ़ाने और भारत को आत्मनिर्भर बनाने वाले अर्थव्यवस्था के अन्य पहलुओं पर ध्यान देने की जरूरत है। वहीं, आद्री की डॉ. बर्ना गांगुली ने टिप्पणी की कि बजट में महिलाओं और बच्चों पर अलग से आबंटन करने के जरिए उन पर दीर्घकालिक ध्यान देने की जरूरत है।

बिहार औद्योगिक संघ, पटना के श्री सज्यजीत सिंह ने बढ़े निजीकरण और निवेश के लिए कानूनी ढांचा को मजबूत करने की जरूरत पर जोर दिया। पटना विश्वविद्यालय की डॉ. सुनीता राय ने कहा कि विशिष्ट नीतियां तैयार करने के लिए प्रखंड और ग्राम पंचायत स्तर पर डेटाबैंक बनाने की जरूरत है। वहीं, आद्री की डॉ. अस्मिता गुप्ता ने ध्यान दिलाया कि हालांकि कोविड-19 तात्कालिक संकट है, लेकिन जलवायु संबंधी आसन्न संकट को नहीं भूलना चाहिए जो बिहार जैसे कम संसाधन वाले राज्य को नुकसान पहुंचा सकता है। डॉ. नंदिनी मेहता, डॉ. मनोज प्रभाकर, श्री रामलाल खेतान और श्री के पी एस केशरी भी वक्ताओं में शामिल थे।

पूर्व में अतिथियों का स्वागत करते हुए प्रोफेसर घोष ने कहा था कि अतिरिक्त मांग पैदा करने के लिए निर्माण क्षेत्र में रोजगार के अवसर पैदा करने को प्रोत्साहन देने से निकट भविष्य में आर्थिक विकास तेज करने में मदद मिल सकती है। आद्री, पटना के डॉ. नीलाद्रि शेखर धर ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

(अंजनी कुमार वर्मा)